International Referred Research Journal, October, 2011. ISSN- 0974-2832, RNI-RAJBIL 2009/29954;VoL.III *ISSUE-33

शोध पत्र- हिन्दी

हरियाणा के प्रबंधकाव्यों में 'शब्दशक्तियों' का प्रयोग

* डॉ. महासिंह पुनिया

October, 2011

* अध्यक्ष हिन्दी विभाग, यूनिवर्सिटी कॉलेज कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

हरियाणा में तीस से अधिक प्रबंधकाव्यों की रचना की गई है। इन काव्यों में कवियों ने शब्दशक्तियों के माध्यम से अपनी आत्मीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'शब्द की शक्ति।' आचार्यों ने 'वृत्ति' और 'व्यापार' शब्द का भी प्रयोग किया है।

'शब्द शक्ति' प्रणेता शब्द की इसी शक्ति के द्वारा ही अर्थ को सहृदय तक पहुंचाता है।'शब्द की शक्ति उसके अन्तर्निहित अर्थ को व्यक्त करने का व्यापार है।'[1] 'शब्द शक्ति उस माध्यम अथवा कारण को कहते हैं, जिससे अर्थ को स्पष्ट करने में सहायता प्राप्त होती है।'[2] काव्यशास्त्रीयों ने शब्द शक्ति के तीन भेद माने हैं –

1. अभिधा शब्द,
2. लक्षणा शब्द शक्ति,
3. व्यंजना शब्द शक्ति।

अभिधा

शब्द की शक्ति से उस शब्द का स्वाभाविक एवं निश्चित अर्थ ज्ञात होता है, उसे 'अभिधा' शब्द शक्ति कहते हैं। हरियाणा की प्रबन्ध कविता में साधारण वर्णों में प्रयुक्त है। यहां पर यह प्रचुर मात्रा में प्रयुक्त है। यह ठीक है कि 'अभिधा' शक्ति काव्य में चमत्कार का सृजन नहीं करती, किंतु 'अभिधा' स्वभावोक्ति का आश्रय लेती हैं और स्वभावोक्ति रसोद्रेक का सरलतम साधन हैं।

महाभारत युद्ध के समय जब श्रीकृष्ण कर्ण को उनके जन्म के रहस्य की जानकारी देकर धर्मानुसार उसे पाण्डव पुत्र की संज्ञा देते हैं और कर्ण को दुर्योधन का साथ न देने के लिए प्रेरित करते हैं। इस दृश्य का वर्णन कवि ने 'अभिधा' शब्द शक्ति के माध्यम से ही प्रस्तुत किया है –

'कर्ण। धृतराष्ट्रों को तजो
नहीं धर्म अनुगामी पथ उनका।
ईर्ष्या, छल, स्वार्थ, अनीति,
अश्व खिंचते रथ उनका।[3]

जब राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत को राजगद्दी मिलती है, तो भरत उसे स्वीकार नहीं करना चाहता और राम को वापिस बुलाने के लिए पंचवटी पहुंचता है। यहां पर भरत एवं राम की आपसी बातचीत ने 'अभिधा' शब्द शक्ति के माध्यम से ही दर्शाया है –

'भाग्य दोष से किन्तु आज मैं हुआ पराया'
ठहरो भरत तुम्हारे मन में यह क्या आया?'
कहने दो प्रभु आज मुझे ये मन की बातें,
जिनके कारण नहीं सका हं सो मैं रातें।[4]

लक्षणा

वाच्यार्थ बोध में बाधा होने पर सादृश्य, सामीप्य अथवा प्रयोजन के कारण वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ का ज्ञान कराने वाली शब्द शक्ति को लक्षणा शब्द शक्ति कहते हैं। 'मुख्य अर्थ के बाधित होने पर किसी रूढ़ि या प्रयोजन से सम्बन्धित अन्य अभिप्रेत अर्थ का जिस शब्द शक्ति द्वारा बोध होता है, उसे लक्षणा शब्दशक्ति कहते हैं।'[5]

हरियाणा के प्रबन्ध कवियों की कल्पना शक्ति प्रखर है। इन्होंने ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है, जो वर्ण्य को मूर्त बनाने में सहायक होते हैं। द्रोणाचार्य प्रतिभा-प्रतियोगिता का आयोजन करते हैं, जिसमें कर्ण सुत पुत्र होने के कारण भाग नहीं ले सकता जिसका कर्ण विरोध करता है –

'तुम्हारे प्रति आदर श्रद्धा रख,
धनुर्विधा में निपुणता पाई।
फलती-फूलती विलक्षण प्रतिमा,
फूटी आंख नहीं सुहाई।[6]

वहां पर फलती-फूलती एवं फूटी आंख न सुहाई में लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग किया गया है। फलती-फूलती से अभिप्राय उन्नति करने से है और फूटी आंख न सुहाने से अभिप्राय क्षणभर के लिए भी न सहन करना। वह जीवन से सुख के विषय में वर्णन करते हुए यहां पर कवि लक्षणा शब्द शक्ति की अभिव्यंजना करता है –

'सब ही चाहते हैं सुख जग में,
पर सदा कहां मिल पाता है।
वह तो दूज का विमल विधु,
जो यदा-कदा ही आता है।[7]

व्यंजना

जिस उक्ति का अभिप्राय 'अभिधा' द्वारा ज्ञात होने वाले 'मुख्यार्थ' से या उस मुख्यार्थ में बाधा पड़ने पर लक्षणा द्वारा लक्ष्यार्थ से भी स्पष्ट नहीं होता, उसके आशय को प्रकट करने के लिए उसमें छिपे हुए किसी विशेष अर्थ का सहारा लेना पड़ता है। इस छिपे हुये (व्यंग्य) अर्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति ही 'व्यंजना' है।'[8]

हरियाणा के प्रबन्ध कवियों ने भी अपने काव्य में 'व्यंजना' शब्द शक्ति का प्रयोग किया है। प्राय: शब्दों में व्यंजना-शक्ति का प्रयोग वहां पर किया गया है, जहां पर कवि रसावेग में आत्मविभोर हो गया है।

पुरुष जब जंगल से काम करके गुफा में वापिस लौटता है तो माया अपने पुत्र को खिला रही होती है। पुरुष माया को ऐसी अवस्था में देख ठिठक जाता है और व्यंग्य करते हुए करता है –

'आ पहुंचा, ठिठका, गुफा-द्वार,
नूतन पर मधुरिम रूदन रार।
अरे! यह कौन कंठ का हार?
झुलाती हो जिसको हर बार?[9]

इन पंक्तियों में कवि ने 'यह कौन कंठ का हार' के माध्यम से 'व्यंजना' की अभिव्यक्ति की है। वेसे तो कंठ का हार, गले के हार से सम्बन्धित है, परंतु यहां पर पुत्र के लिए प्रयोग किया गया है। मुग़लकालीन शासक औरंगजेब के अत्याचारों से आम जनता तंग आ चुकी थी। उनके राज में नारियों की सतीत्व भंग कर दिया जाता है। इस सभी का वर्णन कवि ने इन पंक्तियों में 'व्यंजना' के माध्यम से चित्रित किया है –

'है आज नृशंस कंस का दल, बेबस गोकुल को लूट रहा।
निर्बल सीताओं के सतीत्व का निर्मल दर्पण टूट रहा।
भक्तों के लिए निषिद्ध हुआ है राम नाम का उच्चारण।
हे जग के कारण। किस कारण कर रखा मौन तुमने धारण।'[9]

इन पंक्तियों में कवि अत्याचारों का वर्णन करते हुए आत्मविभोर हो गया है। यहां पर 'नृशंस कंस का दल' में व्यंजना की अभिव्यक्ति होती है। नृशंस कंस का अभिप्राय यहां पर कंश नहीं है, बल्कि ये शब्द औरंगजेब के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। 'हे जग के कारण' में भी व्यंजना शब्द शक्ति निहित है जग के कारण से अभिप्राय: परम शक्ति राम से है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य कोश (भाग एक), पृ. 823 2. डॉ. रामदत्त भारद्वाज, काव्यशास्त्र की रूपरेखा, पृ. 137 3. देवदत्त 'देव', कर्ण, टैगोर शिक्षा समिति, नारनौंद, हिसार, सं. 1996 पृ. 44 4. शर्मा, निषादराज, नटराज पब्लिशिंग हाउस, करनाल, प्र.सं. 1984, पृ. 136 5. मुख्यार्थ बाधे तु तद्योगे रूढितो थ प्रयोजनात्। अन्यो र्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणा रोपिता किया।। – काव्यप्रकाश 6. 'देव', कर्ण, टैगोर शिक्षा समिति, नारनौंद, हिसार, सं. 1996 पृ. 22 7. 15. धर्मचन्द्र 'विद्यालंकार', सूरजमल शौर्य-गाथा, अचल साहित्य प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र. सं. 1993, पृ. ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री, काव्यालोचन, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, सन् 1967, पृ. 29 9. छविनाथ त्रिपाठी, धरा की यात्रा, कादम्बी प्रकाशन, सुदर्शन पार्क, नई दिल्ली, प्र. सं. 198, 1. उदयभानु 'हंस', सन्त सिपाही, गुरु गोबिन्द सिंह फाउंडेशन, चण्डीगढ़, प्र. सं. 1967, पृ